

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, किंग्स, सत्र 29, भाग

2 राजा 22-23, भाग 1

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

पिछले हफ्ते हमने देखा कि यहूदा के आखिरी सालों के लिए साँचे का निर्माण कैसे हुआ। इस हफ्ते हम उम्मीद का एक पल देखते हैं। उम्मीद जो दुर्भाग्य से बुझ गई, लेकिन फिर भी एक पल।

और हम भविष्य में दीर्घकालिक रूप से उस क्षण के महत्व के बारे में सोचना चाहते हैं। जैसा कि पृष्ठभूमि बताती है, जोशियाह 8 वर्ष की आयु में एक बालक के रूप में सिंहासन पर बैठा और 641 से 609 ईसा पूर्व तक शासन किया, लेकिन जब उसकी मृत्यु हुई तब वह केवल 39 वर्ष का था। उसकी मृत्यु की परिस्थितियाँ बहुत स्पष्ट नहीं हैं।

उनके शासनकाल की शुरुआत से लेकर उनकी मृत्यु तक जो कुछ भी हुआ, वह वास्तव में असीरियन साम्राज्य का अचानक पतन था। अंतिम महत्वपूर्ण राजा अशर्बनिपाल नामक व्यक्ति था, और उसने लगभग 40 वर्षों तक शासन किया। और ऐसा प्रतीत होता है कि उन 40 वर्षों के दौरान, शायद वे अपनी उपलब्धियों पर आराम करने लगे क्योंकि उन्होंने कम से कम कुछ समय के लिए मिस्र पर कब्जा कर लिया था, और अपने सभी लक्ष्य हासिल कर लिए थे, लेकिन चीजें स्पष्ट रूप से बिखर गईं।

जब 629 में उनकी मृत्यु हुई, तो उसके बाद से सब कुछ ढह गया। 20 वर्षों के भीतर, अंतिम असीरियन सेनाओं को यूफ्रेट्स नदी पर धकेल दिया गया था और वे अपने जीवन के लिए लड़ रहे थे। 609 में, मिस्र के फिरौन ने, उन कारणों से जो हम पूरी तरह से नहीं जानते, उत्तर की ओर जाने का फैसला किया और देखा कि क्या वह असीरियन की मदद कर सकता है। अधिकांश लोगों का मानना है कि वह जो उम्मीद कर रहा था वह उसके और बेबीलोन के बीच एक कमजोर असीरियन राज्य को बनाए रखना था, और संभवतः यही हो रहा था।

लेकिन मगिदो के दर्रे पर, वह संकरा दर्रा जहाँ से आप तटवर्ती सड़क से होकर आते हैं, फिर से आपके दृष्टिकोण से, पर्वत श्रृंखला के माध्यम से जो माउंट कार्मेल तक फैली हुई है, मिस्र से बेबीलोन तक के महान राजमार्ग पर एक चोक पॉइंट, जोशिया ने मिस्रियों को रोकने की कोशिश की। अब, यह दिलचस्प है कि इतिहास में, फिरौन भगवान की ओर से बोलता है और कहता है, मैं यहोवा की सेवा कर रहा हूँ, और यदि तुम मेरे खिलाफ लड़ोगे, तो तुम यहोवा के खिलाफ लड़ोगे। और जोशिया ने नहीं सुना।

अब, मुझे संदेह है कि उसके न सुनने का एक कारण यह भी था कि उसे पूरा यकीन था कि फिरौन को नहीं पता था कि वह क्या कह रहा है। लेकिन किसी भी हालत में, जोशियाह मारा गया। और इसलिए, हम कल्पना कर सकते हैं कि अगर वह 20 साल और जीवित रहता, तो क्या होता, लेकिन वास्तव में, उसने जो सुधार शुरू किया था, वह अचानक खत्म हो गया।

और उसके बाद उसके तीन बेटे गद्दी पर बैठे। हमारा मानना है कि सबसे बड़ा यहोयाकीम था, जो 25 साल का था। उसका अगला भाई यहोआहाज था, जो 23 साल का था।

लोगों ने यहोआहाज को राजगद्दी पर बिठाया। शायद वह मिस्र विरोधी था; हम नहीं जानते। लेकिन किसी कारण से, उन्होंने उसे उसके बड़े भाई, यहोयाकीम के बजाय चुना।

खैर, मिस्रियों ने उसे केवल तीन महीने बाद ही पकड़ लिया और मिस्र ले गए और बड़े भाई यहोयाकीम को सिंहासन पर बिठाया। खैर, उसने तुरंत मिस्र को बेच दिया। जैसा कि बाइबल हमें बताती है, मिस्र ने यहूदा पर एक बहुत बड़ा कर लगाया था और यहोयाकीम ने आगे बढ़कर इसे इकट्ठा किया, अमीरों पर कर लगाया।

यह 609 ई. की बात है। फिरौन की अशूरियों की मदद से उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ और बेबीलोनियों ने उनकी सेना को हरा दिया।

और कुछ साल बाद, 605 में, नबूकदनेस्सर आया और यहोयाकीम ने घोड़े बदल लिए। उसने मिस्रियों को छोड़ दिया और बेबीलोन का जागीरदार बन गया। लेकिन 601 में, नबूकदनेस्सर को मिस्र की सीमाओं पर हार का सामना करना पड़ा।

यह बात सभी के लिए आश्चर्य की बात थी, जिसमें वह भी शामिल था। उसने अपनी सेना को वापस बेबीलोन बुला लिया ताकि वह फिर से संगठित हो सके। जाहिर है, यहोयाकीम ने अपना मौका देखा और विद्रोह करने का फैसला किया।

इसके बाद, बेबीलोनियों के पीछे हटने के बाद, यह स्पष्ट है कि बाइबिल के पाठ में हमलावरों के बारे में बात की गई है। यह निश्चित रूप से ऐसा लगता है कि क्षेत्र में कोई बड़ी शक्ति न होने के कारण चीजें लगभग ध्वस्त हो गई थीं। और इसलिए, यरूशलेम इन सभी छापों का विषय था।

लेकिन नबूकदनेस्सर का उदय हो रहा था और मिस्र का पतन हो रहा था। नबूकदनेस्सर फिर से संगठित होने में सक्षम था और वापस आ गया। और कभी-कभी, हमें ठीक से पता नहीं होता कि कब, शायद 599 में, बेबीलोन के लोग वापस आ गए थे।

और 598 में यहोयाकीम की मृत्यु हो गई। हमें नहीं पता कि क्यों। राजा और इतिहास एकमत नहीं हैं।

इतिहास कहता है कि वह बेबीलोन में कैद में मर गया। और राजा को इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है। इसलिए, यह एक तरह से रहस्यमय है।

मुझे लगता है कि शहर की घेराबंदी कर दी गई थी। जाहिर है, महामारी फैली हुई थी। अकाल पड़ा हुआ था।

वहाँ आम अराजकता थी। मुझे लगता है कि उन्हें ठीक से पता नहीं होगा कि यहोयाकीम के साथ क्या हुआ। लेकिन वह मर गया।

उसका बेटा, 18 साल का यहोयाकीम, सिंहासन पर बैठा और तुरंत आत्मसमर्पण कर दिया। वह फिर से सिंहासन पर था, जैसे उसके चाचा तीन महीने पहले थे। और पूरा परिवार, पूरा शाही परिवार, बेबीलोन में बंदी बना लिया गया।

और फिर, तीसरा बेटा सिंहासन पर बैठा। उसका नाम मत्तन्याह था। और हम ठीक से नहीं जानते कि क्यों, लेकिन नबूकदनेस्सर ने उसका नाम बदलकर सिदकिय्याह रख दिया।

तो, योशियाह का बेटा नंबर एक है। बेटा नंबर दो है। और बेटा नंबर तीन है।

बाइबल कभी भी सिदकिय्याह को वैध राजा नहीं मानती। वह बेबीलोनियों का नौकर था। बेबीलोनियों ने उसे राजगद्दी पर बिठाया।

और इसलिए यहोयाकीम एक निंदक है। हम अगले सप्ताह इस बारे में बात करेंगे। और सिदकिय्याह एक ऐसा व्यक्ति था जो डंडों से शासन करता था।

हवा जिस तरफ भी बह रही थी, वह उसी के पक्ष में था। और अंततः, उसने नबूकदनेस्सर के साथ अपनी वाचा तोड़ दी। और 589 में, जनवरी में घेराबंदी शुरू हुई।

नहीं, यह 88 होगा। नहीं, मुझे लगता है कि यह 89 होगा। देखते हैं।

जनवरी में शुरू हुआ। और 586 में, जुलाई में, शहर गिर गया। तो यह योशिया के बाद होने वाली सभी घटनाओं की पृष्ठभूमि है।

लेकिन आपको यह बताने के लिए कि हम अगले सप्ताह कहाँ जा रहे हैं। ठीक है, टोरा को ढूँढना। ध्यान दें कि अध्याय 22 की दूसरी आयत में योशियाह के बारे में क्या कहा गया है।

उसने वही किया जो प्रभु की नज़र में सही था। यह बहुत सामान्य बात है। लेकिन अब, जो होने वाला है वह सही नहीं है।

उसने अपने पिता दाऊद के मार्गों का पूरी तरह से पालन किया, न तो दाएं और न ही बाएं मुड़ा। यह असामान्य है। यह उसके बारे में उससे कहीं ज़्यादा बताता है जितना हमने पिछले राजाओं में से सबसे अच्छे राजाओं के बारे में देखा है, जो हिजकिय्याह और आसा थे।

तो यह स्पष्ट है कि इस युवक ने, जो बहुत, बहुत, मैं कहने जा रहा था कि विधर्मी, लेकिन धर्मत्यागी दादा और पिता के साथ, फिर भी, बहुत स्पष्ट रूप से ध्यान दिया था। और वह न केवल सही काम कर रहा था, बल्कि जैसा कि हमें डेविड के बारे में बताया गया है, वह पूरे दिल से परमेश्वर के लिए था। यहाँ कोई विभाजित दिल नहीं है।

वह ऊपर से नीचे तक परमेश्वर का आदमी है। अब, यह स्पष्ट है कि वह बाइबल नहीं जानता। जो कुछ वह जानता है वह स्पष्ट रूप से परंपरा, मौखिक शिक्षा और मौखिक रूप से है क्योंकि मंदिर में अव्यवस्था है।

पद चार और पाँच। महायाजक हिल्किय्याह के पास जाओ और उससे वह धन तैयार करवाओ जो यहोवा के भवन में लाया गया है, जिसे द्वारपालों ने लोगों से इकट्ठा किया है। उसे उन लोगों को सौंप दो जो मंदिर के काम की देखरेख करने के लिए नियुक्त किए गए हैं।

क्या ये लोग उन मज़दूरों को पैसे देते हैं जो यहोवा के मंदिर की मरम्मत करते हैं। अब, आपको क्यों लगता है कि मंदिर की मरम्मत की ज़रूरत थी? खैर, यह अभी तक नष्ट नहीं हुआ है। उसका पूर्ववर्ती कौन था? मनश्शे, हाँ।

52 साल का भ्रष्टाचार। और मुझे लगता है कि यहाँ कुछ और भी चल रहा है। कई साल पहले, मैं माउंड, वेस्ट वर्जीनिया के पास एक हिंदू मंदिर गया था।

हाँ, माउंड, वेस्ट वर्जीनिया। हिंदुओं के एक समूह ने एक बड़ा खेत खरीदा था, और इसलिए जिस पादरी के साथ मैं रह रहा था, मीटिंग कर रहा था, उसने कहा, तुम्हें यह देखना चाहिए। इसलिए, उसने मुझे ओहियो नदी पार कराया। हम ओहियो में थे।

खेत में गंदगी थी, जिससे मैं प्रभावित हुआ। आखिरकार, हम मंदिर तक पहुँच गए। खैर, मंदिर बहुत खूबसूरत था।

इंद्रधनुष के सभी रंग और बाकी सब कुछ। और फिर हम उसके पीछे-पीछे चले। यह सब दिखावा था।

अब, ऐसा क्यों होगा? और मेरा सुझाव है कि इसका उत्तर यह है कि बुतपरस्ती यह नहीं मानती कि यह दुनिया वास्तविक है। यह दुनिया सिर्फ़ एक छाया है। इसलिए, न केवल मनश्शे ने मंदिर को बनाए नहीं रखा होगा क्योंकि यह यहोवा का मंदिर था, और उसे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, बल्कि मेरा यह भी मानना है कि बुतपरस्त विश्वदृष्टि की उसकी मौलिक स्वीकृति ने इसे प्रभावित किया होगा।

यदि आप मानते हैं कि यह दुनिया वास्तविक है, तो इस दुनिया की देखभाल करना महत्वपूर्ण है। इस दुनिया में जो कुछ है उसे परमेश्वर के लिए बनाए रखना, दुनिया के लिए नहीं, हमारे लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के लिए। और इसलिए, इतने सालों पहले सुलैमान ने मंदिर पर जो ध्यान दिया, वह उसके धर्मशास्त्र का प्रतीक था।

यह वह वास्तविक दुनिया है जो ईश्वर ने हमें दी है। यह एक वास्तविक दुनिया है जिसकी जिम्मेदारी उसने हमें सौंपी है। और हमें इसे सर्वोच्च स्तर पर बनाए रखना चाहिए।

तो, मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। जैसा कि हम कुछ ही क्षणों में देखेंगे, यह मूर्तिपूजक सामान से भरा हुआ है। और इसलिए कामगारों को नियुक्त किया जाता है।

अब, मैं चाहता हूँ कि आप श्लोक 7 पर ध्यान दें। उन्हें सौंपे गए पैसे का हिसाब देने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि वे अपने व्यवहार में ईमानदार हैं। यह एक सदी पहले योआश के अधीन काम

करने वाले बिल्डरों के बारे में कही गई बात का सीधा उद्धरण है। मुझे आश्चर्य है कि आपने मुझे यह पहले क्यों कहते सुना है; जब बाइबल ऐसा कहती है, तो इसका मतलब है कि वहाँ कुछ महत्व है।

कुछ महत्व है जिस पर पवित्र आत्मा चाहता है कि हम पहुँचें। फिर से, मुझे संदेह है कि यह इसी बिंदु से संबंधित है। अर्थात्, परमेश्वर का आदेश ईमानदारी को मानता है कि हमारे शब्द और हमारा व्यवहार मेल खाता है।

हमारे शब्दों में एक सच्चाई होती है जो हमारे व्यवहार की सच्चाई से मेल खाती है। फिर से, अगर यह दुनिया एक छाया है, और आप वास्तविक दुनिया को अपनी इच्छानुसार काम करवाने के लिए जादुई अनुष्ठान करते हैं, तो यह दुनिया बहुत मायने नहीं रखती। और आप इस दुनिया में क्या कहते हैं और क्या हैं, इसका बहुत ज़्यादा महत्व नहीं है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अनुष्ठान सही तरीके से करते हैं या नहीं, आप जादू सही तरीके से करते हैं या नहीं। लेकिन आप कौन हैं, क्या आपके शब्द और आपका व्यवहार मेल खाते हैं, और इसका किसी भी चीज़ से क्या लेना-देना है? मुझे लगता है कि यही हो रहा है। असली मंदिर के काम में, ईमानदारी मायने रखती है।

वे साथ-साथ चलते हैं। अब, महायाजक को पुस्तक मिल जाती है और वह उसे पहचान लेता है, कि यह टोरा की पुस्तक है। लेकिन वह उसे रिकॉर्डर या शायद लेखक को दे देता है।

मेरे पास NIV है। इसमें उसे सचिव कहा गया है। मुझे संदेह है कि यह लेखक या मुंशी है।

और लेखक, शापान, इसे योशियाह के पास लाता है और कहता है, पुजारी हिल्कियाह ने मुझे एक किताब दी है। फिर से, मुझे आश्चर्य है कि क्या यह महत्वपूर्ण है। महायाजक हिल्कियाह इसे टोरा के रूप में पहचानता है।

शापान, लेकिन शापान के लिए इसका कोई महत्व नहीं है। यह सिर्फ़ एक किताब है, बस एक और किताब। मुझे लगता है कि यह जो कहता है वह यह है कि धार्मिक लोगों के अलावा, यह सिर्फ़ एक किताब है।

मैं सोचता हूँ कि यह परमेश्वर के वचन के प्रति जागरूकता की हानि को संदर्भित करता है, जो हमारे बीच घटित हो रहा है - मात्र एक पुस्तक।

अगर मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अब सवाल यह है कि यह दुनिया में कैसे खो सकता है? जैसा कि मैंने पृष्ठभूमि में कहा, आज के अधिकांश विद्वान, पुराने नियम के विद्वान, कहेंगे कि यह संभव नहीं है। यह खोया नहीं था।

इसे इसी समय बनाया गया था। यिर्मयाह ने पुस्तक से बहुत उद्धरण दिए हैं, और उसके सभी उद्धरण व्यवस्थाविवरण से हैं। इसलिए, सुझाव यह है कि यह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक थी जो मिली थी, और तर्क यह है कि एक भविष्यवाणी करने वाला समूह बढ़ रहा था, और वे वास्तव में

इज़राइल के बुतपरस्ती के बारे में चिंतित थे और वे इस एकेश्वरवाद और इस यहोवा के चरित्र के बारे में सोचना शुरू कर रहे थे जिसकी कुछ लोग पूजा कर रहे थे और उन्होंने फैसला किया कि हमें इन लोगों को सीधा करना होगा।

इसलिए, उन्हें पता चला कि मंदिर की मरम्मत की जा रही थी। इसलिए, उन्होंने पुस्तक लिखी और उसे वहाँ चिपका दिया ताकि ऐसा लगे कि मूसा ने इसे लिखा है। मैं आपको बता रहा हूँ, आज पुराने नियम के विद्वानों के बीच यही बहुमत की राय है।

तो यह कैसे खो सकता है? वैसे भी, आप अमेरिकी संविधान को कैसे खो सकते हैं? आप क्या सोचते हैं? ठीक है, संभवतः इसकी कई प्रतियाँ नहीं थीं। उन्होंने इसे पढ़ाना और पढ़ना बंद कर दिया था। हाँ, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल सही है।

उस तरह के समाज में जहाँ बहुत ज़्यादा लेखन नहीं होता, वहाँ कुछ लोगों द्वारा स्वीकार किए जाने से ज़्यादा लेखन होता था, लेकिन बहुत ज़्यादा नहीं, जहाँ मौखिक परंपरा किसी भी तरह एक प्रमुख कारक थी, इसलिए मुझे लगता है कि यह मनश्शे से पहले ही व्यवहार में खो गई थी और मनश्शे और अम्मोन के 55 वर्षों के दौरान, यह वास्तव में खो गई थी। मुझे यहाँ विद्वानों की राय के बारे में एक और बात कहने दीजिए। आज ऐसे लोग हैं जो कहेंगे, ठीक है, वे जानते थे। लोगों को पता था कि यह मूसा द्वारा नहीं लिखा गया था।

उन्होंने इस तरह की बातों को स्वीकार किया, और आपने अपनी शिक्षाओं पर किसी ऐसे बुजुर्ग व्यक्ति का नाम रखकर प्रभाव डाला जिसे लोग सम्मान के साथ याद करते, लेकिन हर कोई समझता था। जिसके बारे में मैं श्रद्धापूर्वक कहता हूँ कि यह बकवास है, छद्मलेख के लक्षणों में से एक, यानी, वे पुस्तकें जो हमारे कैनन में नहीं हैं, हमारे मानक संग्रह में नहीं हैं, वे स्पष्ट रूप से किसी और द्वारा लिखी गई हैं, न कि वे जो दावा करते हैं। दूसरे शब्दों में, यदि किसी को संदेह है कि वे वही हैं जो वे दावा करते हैं तो पुस्तकें कैनन में नहीं आती हैं।

इसलिए, कम से कम एक पुराने नियम का छात्र इस बात पर जोर देता है कि, वास्तव में, आपको इस पुस्तक पर विश्वास करना चाहिए। अगर पुस्तक कहती है कि इसे मूसा ने लिखा था, तो मेरे लिए यह काफी है। मेरे लिए यह काफी है।

तो, योशियाह की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें। जब राजा ने व्यवस्था की पुस्तक के शब्दों को सुना, तो दिलचस्प बात यह है कि उसने पहचान लिया कि यह कहाँ से आया है; उसने अपने वस्त्र फाड़ लिए। उसने ये आदेश पुजारी हिल्किय्याह, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के पुत्र अकबोर, सचिव शापान और राजा के सेवक यशायाह को दिए।

मेरे लिए, लोगों के लिए और पूरे यहूदा के लिए यहोवा से पूछो कि इस पुस्तक में क्या लिखा है जो मिली है। उसने ऐसा क्यों किया? उसने किसी और के इस तरह से प्रतिक्रिया करने के बारे में कुछ नहीं कहा। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि महायाजक हिल्किय्याह ने इस तरह से प्रतिक्रिया की थी।

अपने वस्त्र फाड़ डाले। आपको क्या लगता है कि उसने ऐसा क्यों किया? उसने जो कहा उस पर विश्वास किया और हमने उसके चरित्र के बारे में पहले क्या कहा था? हाँ, हाँ। भले ही वह लिखित पाठ को नहीं जानता था, लेकिन वह यहोवा को जानता था और वह जानता था कि यहोवा कैसा था और अब महान स्कॉट, यहाँ एक पुस्तक है जो यहोवा से प्रेरित थी और देखो कि यह क्या कहती है।

दूसरे शब्दों में कहें तो वह जवाब देने के लिए तैयार था। उसके पास एक ऐसा दिल था जो जवाब देने के लिए तैयार था। और मुझे लगता है कि यहीं पर, इस खंड में, मैं कहूँगा कि यह शब्द आपके और मेरे लिए है।

क्या मेरा हृदय प्रभु के प्रति कोमल है? क्या मेरा हृदय उनकी कही हुई हर बात के प्रति खुला है? या क्या मैं अपने चारों ओर एक दीवार खड़ी कर रहा हूँ ताकि मैं परमेश्वर के असुविधाजनक विचारों से बच सकूँ? या क्या मैं कह रहा हूँ, प्रभु, मुझे आपका वचन चाहिए। मुझे आपका सत्य चाहिए। मुझे आपकी इच्छा चाहिए, चाहे वह कुछ भी हो।